Appendix-C

एम.ए.भाग-१ (हिंदी)
प्रश्न पत्र -१
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

प्रस्तावना-

हिन्दी का आदिकालीन काव्य अपनी पृष्ठभूमि में अपभ्रंश के अवदान को पूरी तरह समेटे हुए है. प्रबंध, मुक्तक आदि काव्य रुपों में रचित और अपभ्रंश अवहट्ट एवं देशी भाषा में अभिव्यंजित आदिकालीन साहित्य की परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय एवं सक्षम भूमिका रही है इसके अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नही है. पूर्वमध्यकालीन (भक्तिकालीन) काव्य लोक-जागरण और लोकमंगल का नवीन स्वर लेकर आया. इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है. उत्तरमध्यकालीन (रीतिकालीन) काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यंजना में बेजोड है. इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग की धडकनों को समग्रता में समझने के लिए अनिवार्य है.

प्रथम सत्र

पाठ्य विषय -

इकाई -१

क) मुख्य पाठ

१) विद्यापति :- विद्यापति पदावली सं. सूर्यबलीसिंह (आरंभ के २० पद)

२) घनानंदः- घनानंद कवित्त सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र (आरंभ के २० पद)

३) कबीर – कबीर ग्रंथावली संपा. श्यामसुंदर दास (गुरुदेव को अंग, विरह को अंग, काल को अंग , भेष को अंग) प्रत्येक अंग की प्रारंभिक – २० साखियॉ

४) जायसी : पद्मावत, संपा. आचार्य रामचंद्र शुक्ल (मानसरोदक खण्ड, नागमति वियोग खण्ड)

इकाई – २

ख) द्रुतपाठ

१) पद्माकर
२) अमीर खुसरो
३) रैदास
४) रहीम
५) रसखान
६) केशवदास

अंक विभाजन

लिखित प्रश्नपत्र	८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन	२० अंक
कुल अंक	-१०० होंगे

प्रश्नपत्र का स्वरुप

समय ३ घंटे पूर्णांक -८०

प्रश्न क्रं. १ : इकाई -१ के प्रत्येक कवि की कृति से एक एक व्याख्या कुल चार व्याख्याऍ पूछी जायेंगी जिनमें से दो व्याख्याऍ करना अनिवार्य है, प्रत्येक व्याख्या पर ८ अंक निर्धारित है. 2x8 =16 अंक

प्रश्न क्रं.२ इकाई एक के कवियों पर अथवा कविताओं पर चार दीर्घोत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से दो प्रश्न हल करने होंगे प्रत्येक प्रश्न पर १६ अंक निर्धारित है. 2x16 =32 अंक

प्रश्न क्रं.३ इकाई दो के प्रत्येक कवि पर एक-एक लघूत्तरी प्रश्न इस प्रकार कुल छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार प्रश्न हल करने होंगे. 4x4 =16

प्रश्न क्रं.४ संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित १६ वस्तुनिष्ठ / अतिलघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे, प्रत्येक प्रश्न १ अंक होगा. 16x1 =16

आंतरिक मूल्यांकन

१) विद्यार्थी को संबंधित प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित एक शोधपत्र लिखना होगा, जिसके लिए १० अंक निर्धारित है.

२) महाविद्यालय में कार्यरत विषय अध्यापक द्वारा विषय से संबंधित मौखिकी परीक्षा ली जायेगी, जिसके लिए १० अंक निर्धारित है. कुल २० अंक

एम.ए.भाग-१ (हिंदी)
प्रश्न पत्र -१
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
द्वितीय सत्र

इकाई एक
क) मुख्य पाठ
१) सूरदास :- भ्रमरगीत सार - सं.आचार्य रामचंद्र शुक्ल (५१ से ७० पद)
२) तुलसीदास :- सुंदरकांड (गीता प्रेस गोरखपुर)
३) बिहारीलाल :- बिहारी रत्नाकर -सं.जगन्नाथ दास रत्नाकर (प्रथम ५० दोहे)
४)मीराबाई :- मीरॉ पदावली - शम्भुसिंह मनोहर रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर-१ (प्रथम १५ पद)
इकाई दो
ख) द्रुतपाठ
१) नामदेव
२) भूषण
३) देव
४) गुरुगोविंद सिंह
५) सेनापति
६) दादू दयाल

अंक विभाजन

लिखित प्रश्नपत्र ८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन २० अंक

कुल १०० अंक

प्रश्न क्रं. १ इकाई एक के प्रत्येक कवि की कृति से एक-एक व्याख्या कुल चार व्याख्याएँ पूछी जायेंगी जिनमें से दो व्याख्याएँ लिखना अनिवार्य है. प्रत्येक व्याख्या पर ८ अंक निर्धारित है . 2x8 =16 अंक

प्रश्न क्रं. २ इकाई एक के कवियों पर ४ दीर्घोत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से दो प्रश्न हल करने होंगे. प्रत्येक प्रश्न पर १६ अंक निर्धारित है. 2x16 =32 अंक

प्रश्न क्रं. ३ इकाई दो के प्रत्येक कवि पर एक एक लघूत्तरी प्रश्न इस प्रकार कुल छः प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से चार प्रश्न हल करने होंगे. 4x4 =16 अंक

प्रश्न क्रं. ४ संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित १६ प्रश्न वस्तुनिष्ठ / अतिलघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे. प्रत्येक प्रश्न १ अंक का होगा. 16x1 =16 अंक

आंतरिक मूल्यांकन

१) विद्यार्थी को संबंधित प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित एक शोधपत्र लिखना होगा जिसके लिए १० अंक निर्धारित है.

२) महाविद्यालय में कार्यरत विषय अध्यापक द्वारा विषय से संबंधित मौखिकी परीक्षा ली जायेगी, जिसके लिए १० अंक निर्धारित है. कुल २० अंक

एम.ए.भाग-१ (हिंदी)
प्रश्न पत्र – २
हिन्दी साहित्य का इतिहास
प्रथम सत्र

प्रस्तावना-

किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति दशा एवं संवेदना के विविध स्वरुपों का संचित रुप वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होता है. सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण चित्तवृत्तियों में परिवर्तन होता है फलतः साहित्यिक रुपों में भी बदलाव आ जाता है. इस बदली हुई विकास प्रक्रिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही देखा –परखा जा सकता है. हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों सें कमोवेश पूरा भारत प्रभावित होता रहा है, जिसकी गुंज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित हैं. आठवीं-नवी शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रुपों प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है. अतः इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है.

पाठ्यविषय –

इकाई एक - इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास, हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन, काल विभाजन, सीमा निर्धारण और नामकरण, आधाभूत सामग्री, इतिहास लेखन की समस्याएँ, साहित्य के प्रमुख इतिहासकार

इकाई दो - आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्व और नाथ साहित्य, रासो काव्य, जैन काव्य.
इकाई तीन- मध्यकाल की पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक चेतना, भक्ति आन्दोलन, निर्गुन काव्यधारा, सगुण काव्यधारा, प्रमुख निर्गुण कवि और उनका प्रदेय, सगुण भक्त कवि और उनका प्रदेय, रामभक्ति धारा, कृष्ण भक्ति धारा, सूफी काव्यधारा प्रमुख कवि और उनका रचनात्मक वैशिष्ट्य.

अंक विभाजन

लिखित प्रश्नपत्र — ८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन -२० अंक

कुल १०० अंक

प्रश्नपत्र का स्वरुप एवं अंक विभाजन

समय ३ घंटे (पूर्णांक -८०)

प्रश्न-१ :- इकाई एक से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न विकल्प के साथ पूछा जायेगा. 1x16 =16 अंक
प्रश्न-२ :- इकाई दो से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न विकल्प के साथ पूछा जायेगा. 1x16 =16 अंक
प्रश्न-३ :- इकाई तीन से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न विकल्प के साथ पूछा जायेगा.1x16 =16 अंक
प्रश्न-४ :- इकाई १,२,३ से छ : लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से चार प्रश्न हल करने होंगे. 4x4 =16 अंक
प्रश्न-५ :- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित १६ वस्तुनिष्ठ / अतिलघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे प्रत्येक प्रश्न १ अंक का होगा. 16x1 =16 अंक

आंतरिक मूल्यांकन

१) विद्यार्थी को संबंधित प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित एक शोध-पत्र लिखना होगा इसके लिए १० अंक निर्धारित है.

२) महाविद्यालय में कार्यरत विषय अध्यापक द्वारा विषय से सम्बन्थित मौखिकी परीक्षा ली जायेगी, जिसके लिए १० अंक निर्धारित है. कुल अंक

एम.ए.भाग-१ (हिंदी)
प्रश्न पत्र — २
हिन्दी साहित्य का इतिहास
द्वितीय सत्र

पाठ्यविषय —

इकाई १ - रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल सीमा और नामकरण, लक्षण ग्रंन्थो की परम्परा, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्व, रीतिसिद्व, रीतिमुक्त) प्रवृत्तियॉ और विशेषताएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ.
इकाई २ - आधुनिक काल- सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि, १८५७ की राज्य क्रान्ति, पुनर्जागरण काल- भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, उत्तर छायावाद- प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, समकालीन कविता, प्रमुख रचनाकर और उनकी रचनाएँ.
इकाई ३ - हिंदी गद्य की प्रमुख विधाएँ — कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, , आत्मकथा, रिपोर्ताज का उद्भव एवं विकास, हिंदी आलोचना का उद्भव एवं विकास.

अंक विभाजन

लिखित प्रश्न पत्र — ८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन -२०

कुल १०० अंक

प्रश्न पत्र का स्वरुप एवं अंक विभाजन--

प्रश्न-१ :- इकाई एक से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न विकल्प के साथ पूछा जायेगा. 1x16 =16 अंक
प्रश्न-२ :- इकाई दो से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न विकल्प के साथ पूछा जायेगा. 1x16 =16 अंक
प्रश्न-३ :- इकाई तीन से एक दीर्घोत्तरी प्रश्न विकल्प के साथ पूछा जायेगा. 1x16 =16 अंक
प्रश्न-४ :- इकाई १,२,३ से कुल छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार प्रश्न हल करने होंगे. 4x4 =16 अंक
प्रश्न-५ :- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित १६ वस्तुनिष्ठ /अतिलघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे. प्रत्येक प्रश्न १ अंक का होगा 16x1 =16 अंक

आंतरिक मूल्यांकन

१) विद्यार्थी को संबधित प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित एक शोध-पत्र लिखना होगा इसके लिए १० अंक निर्धारित है.

२) महाविद्यालय में कार्यरत विषय अध्यापक द्वारा विषय से सम्बन्धित मौखिकी परीक्षा ली जायेगी, जिसके लिए १० अंक निर्धारित है. कुल अंक २०

एम.ए.भाग-१ (हिंदी)

प्रश्न पत्र – ३

काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

प्रथम सत्र

प्रस्तावना-

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्‌घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्या लोचन का ज्ञान अपरिहार्य है. इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है. वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके. सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने और जॉचने-परखने के लिए भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी के निजी साहित्या लोचन का अध्ययन समीचीन है.

प्रथम सत्र

पाठ्यविषय-

इकाई १ क)- संस्कृत काव्यशास्त्र – काव्य-लक्षण काव्य हेतु काव्य-प्रयोजन, काव्य के प्रकार -रस सिद्वान्त -रस का स्वरुप, रसनिष्पत्ति, रस के अंग, साध रणीकरण, सहद्वय की अवधारणा.

-अंलकार सिद्वान्त- मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण

-रीति सिद्वान्त – रीति की अवधारणा, काव्य-गुण, रीति एवं शैली, रीतिसिद्वान्त की प्रमुख स्थापनाएँ .

- वक्रोक्ति-सिद्वान्त- वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद.

- ध्ननि-सिद्वांन्त – ध्वनि का स्वरुप , ध्वनि सिद्वान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद गूणीभूत व्यंग्य, चित्रकाव्य.

-औचित्य-सिद्वान्त- प्रमुख स्थापनाएँ औचित्य के भेद.

इकाई २ ख) व्यावहारिक समीक्षा- प्रश्न पत्र में पूछे गये किसी गद्यांश / पद्यांश की स्वविवेक से समीक्षा

अंक विभाजन

लिखित प्रश्न पत्र – ८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन -२०

कुल १०० अंक

प्रश्नपत्र का स्वरुप –

समय ३ घंटे पूर्णांक – ८०

प्रश्न १ इकाई एक से कुल चार आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से दो प्रश्न करना अनिवार्य है ! 2x16 =32

प्रश्न २ इकाई द से गद्यांश अथवा पद्यांश की स्वविवेक से समीक्षा. – १६ अंक

प्रश्न ३ सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित कुल छ : प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से चार प्रश्न करना अनिवार्य होगा. 4x4=16 अंक

प्रश्न ४ सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित १६ वस्तुनिष्ठ / अतिलघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे. प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा 1x16 =16 अंक

आंतरिक मूल्यांकन –

१) विद्यार्थी को संबंधित प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित एक शोध-पत्र लिखना होगा, इसके लिए १० अंक निर्धारित है.

२) महाविद्यालय में कार्यरत विषय अध्यापक द्वारा विषय से सम्बन्धित मौखिकी परीक्षा ली जायेगी, जिसके लिए १० अंक निर्धारित है . कुल २० अंक

एम.ए.भाग-१ (हिंदी)

प्रश्न पत्र – ३

काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

द्वितीय सत्र

इकाई १ क)- पाश्चात्य काव्यशास्त्र

– प्लेटो – काव्य-सिद्वान्त.

-- अरस्तू - अनुकरण-सिद्वान्त , त्रासदी-विवेचन.

- लोंचाइनस- उदात्त की अवधारणा

-- वड्र्सवर्थ – काव्य भाषा सिद्वान्त
-- मैथ्यू आर्नल्ड - आलोचना का स्वरुप और प्रकार्य.
-- टी.एस. इलियट- परंपरा की परिकल्पना, निर्वेयक्तिकता का सिद्वान्त, वस्तुनिष्ठ समीकरण.

इकाई २ ख) सिद्वान्त और वाद - अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद तथा अस्तित्ववाद.

इकाई ३ ग) आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ -- संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद.

इकाई ४ घ) हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ - व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय.

अंक विभाजन

लिखित प्रश्न पत्र – ८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन -२०

कुल १०० अंक

प्रश्नपत्र का स्वरुप –

समय ३ घंटे पूर्णांक – ८०

प्रश्न १ इकाई एक से कुल चार आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से दो प्रश्न करना अनिवार्य होंगे 2x16 =32 अंक

प्रश्न २ इकाई दो से कुल दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे जीनमें से एक प्रश्न करना अनिवार्य होगा. 1x16 =16 अंक

प्रश्न ३ इकाई ३ और ४ पर आधारित कुल ६ लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से चार प्रश्न करना अनिवार्य होगा. 4x4=16 अंक

प्रश्न ४ सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित १६ वस्तुनिष्ठ / अतिलघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे ! प्रत्येक प्रश्न १ अंक का होगा. 1x16 =16 अंक

आंतरिक मूल्यांकन – कुल अंक -२०

१) विद्यार्थी को संबंधित प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित एक शोध-पत्र लिखना होगा इसके लिए १० अंक निर्धारित है.

२) महाविद्यालय में कार्यरत विषय अध्यापक द्वारा विषय से सम्बन्थित मौखिकी परीक्षा ली जायेगी जिसके लिए कुल १० अंक निर्धारित है. कुल २० अंक

एम.ए.भाग-१ (हिन्दी)
प्रश्न पत्र – ४
विशेष अध्ययन : (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)
(अ) : प्रेमचंद

प्रस्तावना :-

हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद का विशेष स्थान है अतः उनका अध्ययन हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के लिये विशेष महत्व रखता है. प्रेमचंद ने बहुविध लेखन किया है. परंतु कथाकार के रुप में उनकी विशेष ख्याति है अतः विशेष अध्ययन में उनके इसी रुप को अधिक महत्व दिया गया है. उनके समग्र व्यक्तित्व-कृतित्व का सघन अध्ययन अपेक्षित है.

प्रथम सत्र

पाठ्यविषय :-

इकाई १ उपन्यास :- सेवासदन, रंगभूमि, गबन

इकाई २ कहानी :- बडे घर की बेटी, पंच-परमेश्वर, पूस की रात, दो बैलों की कथा, ईदगाह, नशा

अंक विभाजन :-

लिखित प्रश्नपत्र – ८० अंक

आंतरिक मूल्यांकन – २० अंक

कुल १०० अंक

प्रश्नपत्र का स्वरुप

समय ३ घंटे पूर्णांक – ८०

प्रश्न १ इकाई १ के प्रत्येक उपन्यास से एक व्याख्या होगी.
कुल तीन व्याख्याएँ पूछी जायेंगी, जिनमें से दो व्याख्याएँ हल करना अनिवार्य है. 2x8 =16 अंक

प्रश्न २ इकाई १ के तीनों उपन्यास से तीन दीर्घोत्तरी आलोचनात्मक प्रश्न (प्रत्येक उपन्यास पर एक प्रश्न) होंगे, जिनमे से दो प्रश्न हल करने होंगे. 2x16 =32 अंक

प्रश्न ३ इकाई २ की कहानियों पर आधारित (प्रत्येक कहानी से एक) छह लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से ४ प्रश्न हल करने होंगे, प्रत्येक प्रश्न चार अंको का होगा. 4x4 =16 अंक

प्रश्न ४ संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित १६ वस्तुनिष्ठ / अतिलघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे. प्रत्येक प्रश्न १ अंक का हौगा. 1x16 =16 अंक

आंतरिक मूल्यांकन

१) विद्यार्थी को संबंधित प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित एक शोध-पत्र लिखना होगा इसके लिए १० अंक निर्धारित..

२) महाविद्यालय में कार्यरत विषय अध्यापक द्वारा विषय से सम्बन्थित मौखिकी परीक्षा ली जायेगी जिसके लिए कुल १० अंक निर्धारित है. कुल अंक -२०

एम.ए.भाग-१ (हिन्दी)

प्रश्न पत्र – ४

विशेष अध्ययन : (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

(अ) : प्रेमचंद

द्वितीय सत्र

पाठ्यविषय :-

इकई १ उपन्यास :- कर्मभूमि, गोदान, निर्मला

इकाई २ साहित्य का उद्देश :- साहित्य का उद्देश, जीवन में साहित्य का स्थान, साहित्य में समालोचना, साहित्य और मनोविज्ञान, उर्दू , हिंदी, और हिन्दुस्तानी, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र

अंक विभाजन :-

लिखित प्रश्नपत्र – ८० अंक

आंतरिक मूल्यांकन – २० अंक

कुल १०० अंक

प्रश्नपत्र का स्वरुप

समय ३ घंटे पूर्णांक – ८०

प्रश्न क्रं. १ इकाई १ के प्रत्येक उपन्यास से एक व्याख्या होगी. कुल तीन व्याख्याएँ पूछी जायेंगी, जिनमें से दो व्याख्याएँ हल करना अनिवार्य है. 2x8 =16 अंक

प्रश्न क्रं. २ इकाई १ के तीनों उपन्यास से तीन दीर्घोत्तरी आलोचनात्मक प्रश्न (प्रत्येक उपन्यास पर एक प्रश्न) होंगे, जिनमे से दो प्रश्न हल करने होंगे. 2x16 =32 अंक

प्रश्न क्रं. ३ इकाई २ के निबंधों पर आधारित (प्रत्येक निबंध से एक) छह लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे) जिनमें से ४ प्रश्न हल करने होंगे, प्रत्येक प्रश्न चार अंको का होगा. 4x4 =16 अंक

प्रश्न क्रं.४ संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित १६ वस्तुनिष्ठ / अतिलघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे. प्रत्येक प्रश्न १ अंक का होगा. 1x16 =16 अंक

आंतरिक मूल्यांकन

१) विद्यार्थी को संबंधित प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित एक शोध-पत्र लिखना होगा, इसके लिए १० अंक निर्धारित है.

२) महाविद्यालय में कार्यरत विषय अध्यापक द्वारा विषय से सम्बन्थित मौखिकी परीक्षा ली जायेगी जिसके लिए कुल १० अंक निर्धारित है. कुल अंक २०

एम.ए.भाग-१ (हिन्दी)

प्रश्न पत्र – ४

विशेष अध्ययन : (वैकल्पिक प्रश्नपत्र)

(आ) : जयशंकर प्रसाद

प्रस्तावना :-

छायावाद समस्त विकास प्रक्रिया को समेटते हुए नई नई भावभूमि और नए नए रुप विन्यास देने में मील का पत्थर सिद्व हुआ स्थुल इतिवृतात्मकता की जगह सूक्ष्मता, तथ्य की जगह विराट कल्पना, सामाजिक बोध की जगह व्यक्तित्व की स्वाधीनता, प्रकृति-साहचर्य, मानव-प्रेम, वैयक्तिक-प्रेम, उच्च नैतिक-आदर्श, देशभक्ति, राष्ट्रीय स्वाधीनता एवं सांस्कृतिक जागरण का स्वर लेकर जयशंकर प्रसाद का हिन्दी साहित्य में अवतरण हुआ अतः प्रसाद का अध्ययन मनन अति प्रासंगिक एवं अनिवार्य प्रतीत होता है इसी उद्देश्य को लेकर उनके कवि, नाटककार, कहानीकार एवं निबंधकार (विचारक) रुप से परिचित कराना यहॉ आवश्यक समझा गया है